श्रीमद्भगवत्कुन्दकुन्दाचार्य विरचित

रयणसार

ग्रंथस्योपरि श्रीमद्गणाचार्यविरागसागरवर्येण
विरचिता संस्कृतटीका

रत्नत्रयवर्धिनी

उत्तरार्द्ध

संस्कृत टीकाकार
परमपूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री 108 डॉ. विरागसागर जी महाराज

सम्पादन एवं अनुवाद
प्रो. डॉ. दामोदर शास्त्री

Scanned with CamScanner

[श्रीमद्-भगवत्कुन्दकुन्दाचार्य-विरचित]

रयणसार

ग्रन्थ पर रचित संस्कृत टीका

रत्नत्रयवर्धिनी

उत्तरार्द्ध

(गाथा 77 से 168 तक)

'रत्नत्रयवर्धिनी' संस्कृत टीकाकार

प. पू. गणाचार्य श्री 108 डॉ. विरागसागरजी महाराज

सम्पादन एवं हिन्दी अनुवाद

प्रो. डॉ. दामोदर शास्त्री

भारतीय ज्ञानपीठ

प्रथम संस्करण : 2017 ❑ मूल्य : 650 रुपये

Scanned with CamScanner

ISBN 978-81-263-5563-6 (Set)
978-93-263-5565-0 (Vol.II)

भारतीय ज्ञानपीठ

(स्थापना : फाल्गुन कृष्ण 9; वीर नि. सं. 2470; विक्रम सं. 2000; 18 फरवरी 1944)

पुण्यश्लोका माता मूर्तिदेवी की स्मृति में
साहू शान्तिप्रसाद जैन द्वारा संस्थापित
एवं
उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रमा जैन द्वारा सम्पोषित

मूर्तिदेवी जैन ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला के अन्तर्गत प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी, कन्नड़, तमिल आदि प्राचीन भाषाओं में उपलब्ध आगमिक, दार्शनिक, पौराणिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक आदि विविध विषयक जैन साहित्य का अनुसन्धानपूर्ण सम्पादन तथा उनके मूल और यथासम्भव अनुवाद आदि के साथ प्रकाशन हो रहा है। जैन-भण्डारों की ग्रन्थसूचियाँ, शिलालेख-संग्रह, कला एवं स्थापत्य पर विशिष्ट विद्वानों के अध्ययन-ग्रन्थ और लोकहितकारी जैन साहित्य ग्रन्थ भी इस ग्रन्थमाला में प्रकाशित हो रहे हैं।

•

प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली-110 003

मुद्रक : विकास कम्प्यूटर ऐंड प्रिंटर्स, दिल्ली-110 032

© भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित

Scanned with CamScanner